International Journal of Applied Research 2017; 3(2): 183-184

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2017; 3(2): 183-184
www.allresearchjournal.com
Received: 21-12-2016
Accepted: 23-01-2017

डॉ. दीपक भारद्वाज
सह आचार्य, चित्रकला
राजकीय मीरा कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय उदयपुर, राजस्थान, भारत।

Correspondence
डॉ. दीपक भारद्वाज
सह आचार्य, चित्रकला
राजकीय मीरा कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय उदयपुर, राजस्थान, भारत।

राजस्थान की कला का आधुनिक परिदृश्य

डॉ. दीपक भारद्वाज

सारांश
राजस्थान की कला चेतना और आधुनिक बोध के दर्शन पांच दशकों मे यहां हुये कला सृजन के किये जा सकते है। यहां के चित्रकारों ने आधुनिक बोध को स्वीकारते हुये लोक कला प्रतीकों एवं परम्परागत शैलियों का आज के संदर्भो में प्रयोग करते हुये जहां पर और आधुनिक कला को गति दी है। वही हमारी परम्परागत एवं लोक जीवन से जुड़ी कला शैलियों को जीवंत रखने में महत्ती भूमिका अदा की है। राजस्थान की विभिन्न शैलियों मेवाड़, मारवाड, ढूँढाड व हाड़ोती के रूपगत अमूर्तता के साथ–साथ रंगों व प्रकृति के सरलीकृत अभिप्रायों में भी अर्मूतता देखी जा सकती है।

मूल शब्दः कला, आधुनिक परिदृश्य, सरलीकृत अभिप्रायों

प्रस्तावना
राजस्थान में कला, शिल्प, गीत–संगीत, नृत्य आदि विविध सांस्कृतिक एवं साहित्यिक विधाओं के लिये अनुकूल वातावरण रूचि एवं सरसता सदैव मौजूद रही है। राजस्थान की भिन्न–भिन्न रियासतों में पनप कर पूर्णता को पहुची हुई राजस्थान की लघुचित्र शैलियों की धाक न केवल भारतीय कला जगत तक ही सीमित है बल्कि विश्व का कला संसार इन शैलियों से चमत्कृत है। जिसके दर्शन हम जयपुर, कोटा, बून्दी, अजमेर, मेवाड, किशनगढ़, जोधपुर, बीकानेर, जैसलमेर, नाथद्वारा, अलवर आदि शैलियों के नाम से विख्यात लघुचित्र परम्परा में कर सकते हैं।
सन् 1947 के पश्चात् राजस्थान के चित्र सृजन की दिशा बदली और परम्परा से हटकर विविध नयी तकनीकों को अपनाते हुए तथा बदलते हुए सामाजिक परिवेश में यहां के आधुनिक चित्रकारों ने अपनी अभिव्यक्ति दी है।
राजस्थान ही वह पहला प्रदेश बना जहां सर्वप्रथम सन् 1957 में ललित कला अकादमी की स्थापना जयपुर मे की गई। 'शैलेन्द्रनाथ डे जैसे प्रसिद्ध कलाकार का आगमन व बंगाल के पुर्नजागरण के प्रभाव से ही नवीन कला शिक्षा का आरंभ हुआ। अग्रणीय कलाकारों में रामगोपाल विजयवर्गीय, कृपाल सिंह शेखावत, देवकीनन्दन शर्मा एवं द्धारकाप्रसाद शर्मा थे। इन कला गुरूओं ने राजस्थान की पारम्परिक कला और बंगाल की ''वाश तकनीक'' तथा नवीन कला रूपों को अपनी कला में स्थान देकर राजस्थान की कला परिदृश्य में नव–जागरण का श्रीगणेश किया।'
बंगाल स्कूल ने राजस्थान के वरिष्ठ चित्रकारों पर गहरा प्रभाव छोड़ा है। राजस्थान में भी यर्थाथवादी व्यक्ति चित्र व प्रकृति चित्रों का निर्माण हुआ है। कुन्दनलाल जैसे राजा रवि वर्मा की परम्परा के कलाकारों तथा मूलर जैसे योग्य कलाकारों ने राजस्थान में यह कार्य किया। राजस्थान में बंगाल के पुर्नजागरण काल की कला का प्रभाव विशेष देखने को मिलता है। इसके अग्रणी कलाकार रामगोपाल विजयवर्गीय के तीखे नाक–नक्श लहराते अंग–प्रसंग, पारदर्शीय वस्त्र, कोमल रेखांकन, धूमिल रंग योजनामें मेघदूत, शाकुन्तलम् आदि पर आधारित चित्र तृतीय एवं चतुर्थ दशक में खूब प्रशंसित हुए।
इस कड़ी के अन्य कलाकार श्री गोवर्धनलाल जोशी, श्री रामनिवास वर्मा व राम जेसवाल है, जिन्होनें मेवाड़ की परम्परागत व लोक शैली व बंगाल की वाश तकनीक को अपनी कृतियों का आधार बनाया। भूरसिंह शेखावत ने अपने को यथार्थवादी ग्रामीण परिवेश के माध्यम से और बी.सी. गुई ने यूरोपियन 'लेण्डस्केप' को अकादमिक परम्परा के माध्यम से मुखर किया। श्री सांखलकर ने भी इसी श्रृंखला को आगे बढ़ाने मे अपना योगदान दिया। श्री पी.एन. चोयल भी यद्यपि इसी समय के कलाकार है लेकिन उन्होने अपने आपको सीधे समसामयिक कला से जोड़ने का उपक्रम किया।
20वीं सदी के सातवें दशक में श्री ज्योतिस्वरूप नें कला के क्षेत्र में अपनी नई तकनीक के साथ पर्दापण किया। सातवें दशक में ही राजस्थान के कई शहरों में विश्वविद्यालय स्तर पर कला शिक्षा का प्रारंभ हुआ।

अजमेर में डी.ए.वी. कॉलेज, उदयपुर विश्वविद्यालय व वनस्थली विद्यापीठ में कला शिक्षा दी जाने लगी। राजस्थान को राष्ट्रीय स्तर पर समसामयिक कला धारा से सीधे जोड़ने का प्रयास किया गया। अब राजस्थान का युवा वर्ग भी राज्य के बाहर मुम्बई, बड़ौदा व शांतिनिकेतन जैसी प्रसिद्ध कला शिक्षा संस्थाओं से प्रशिक्षित होकर कला जगत में प्रवेश कर रहा था। इस समय पारम्परिक कला के गढ़ व कला जागृति का उचित वातावरण बनना ही राजस्थान के लिये एक अनूठा सत्य था।

''राजस्थान में अनेक कलाकारों ने ज्यामितिय रूपाकारों में अमूर्त संयोजनों को व्यक्त किया है। इनमें सर्वप्रथम मोहन शर्मा को ले सकते है। अपने ज्यामितिक रूपाकारों को केनवास पर लेण्डस्केप एवं वास्तुस्केप तथा सी स्केप आदि संयोजनो के रूप में टेक्सचर के साथ प्रस्तुत किया। ज्यामितिय अमूर्त संयोजनों में अपनी पहचान बनाने वालों में सुरेश शर्मा का भी नाम उल्लेखनीय है। इनके चित्रों में साफ्ट तथा हार्ड एज दोनो ही प्रकार की ज्यामितिय तकनीक का प्रभाव है। चौकोर व रंगीन पट्टिकाओं के बीच–बीच में से अर्मूत रूपकार उभरने लगते है। इसी कड़ी को आगे बढ़ाने में शब्बीर काजी सबसे आगे हैं, जिनके ज्यामितिय प्रयोग ऑप आर्ट व तांत्रिक विद्या से प्रभावित दिखाई देते है।

ज्यामितिय रूपाकारों के साथ कलाजगत में प्रवेश करने वालों में विद्यासागर उपाध्याय का नाम इसी कड़ी को आगे बढाता है। जिन्होंने विशुद्व ज्यामितिय पैंसिल रेखांकनों से ही अपनी कला यात्रा प्रारंभ की। इनके चित्रों में प्रकृति के तत्व पहले चित्र तल के मध्य संतुलित हुआ करते थे। अब विस्तार पाने लगे है। ज्यामितिय रचना संसार में भवानीशंकर शर्मा, लक्ष्मीलाल वर्मा, दिलीप सिंह चौहान भी अपना विशिष्ट स्थान रखते है। इनके रचना संसार में केनवास पर पेन व रंगों का एक साथ प्रयोग धरातलीय टेक्सचर जो सम्पूर्ण चित्र फलक पर आच्छादित कहीं हल्के व कहीं गहरे रूप में दिखाई देता है।

अमूर्त कला के राज्य के प्रसिद्ध कलाकारों में ज्योतिस्वरूप, आर. बी. गौतम, प्रेमचन्द गोस्वामी के नाम उल्लेखनीय है। ज्योति स्वरूप स्प्रे माध्यम द्वारा सम्पूर्ण सतह पर विभिन्न रूपाकारों को उभार कर अलग–अलग रंग तलों के अमूर्त संयोजनों द्वारा एक अद्भूत संसार का भान कराते है।

''इसी कड़ी में सुरेन्द्र जोशी रंगीन टेक्सचरयुक्त वातावरण में मानो अपनी आकृतियों को उनके भाव अनुभवों के साथ पिरोते चलते है। अपनी अनेक नव–निर्मित श्रृंखलाओं के माध्यम से उन्होने नवीनता और प्रयोग– धर्मिता को अभिव्यंजनात्मक अमूर्तता के साथ प्रस्तुत किया है।''

राजस्थान की समकालीन कला में कुछ महिला कलाकारों का नाम योगदान भी उल्लेखनीय है। दीपिका हाजरा, प्रभा शाह, जया बिटन, किरण मुर्डिया, मीनाक्षी भारती, वीरबाला भावसार एवं सपना शर्मा के नाम प्रमुख हैं, जिन्होने अलग–अलग प्रकार के प्रयोगो से भिन्न प्रकार का कार्य किया है।

इसके अतिरिक्त कलाकारों का एक बडा समूह राजस्थान की परम्परागत कला व उसके अभिप्रायों को नया व मौलिक स्वरूप प्रदान करने की दिशा में कृत संकल्प हुआ है। इस वर्ग के कलाकार दो भिन्न विचारधाराओं से प्रभावित थे (i) पहले वर्ग में जिन्होने लघु चित्रों से प्रेरणा ग्रहण कर अपने चित्रों का संसार सजाया उनमें– शैल चोयल, सुमहेन्द्र, कन्हैयालाल वर्मा, नाथूलाल वर्मा, समन्दर सिंह खंगारोत, किरण मुर्डिया, प्रभा शाह आदि प्रमुख है। (ii) दूसरे वे जो लोककला से प्रभावित थे उनमें– बसंत कश्यप, रामेश्वरसिंह, गोवर्धनलाल जोशी व अब्बास अली बाटलीवाला प्रमुख है।

''शैल चोयल ने राजस्थानी लघु चित्रों की सरल व सपाट चित्र सतह, चटकीले रंग उस पर आच्छादित वृक्ष झुण्ड सभी को नवीन परिवेश, नवीन स्पेस, नवीन विचारधारा और नवीन सौन्दर्य के साथ ग्रहण किया। सुमहेन्द्र ने परम्परागत परिवेश को ज्यों का त्यों ग्रहण किया। समन्दर सिंह खंगारोत ने पुरातन से ही नवीन रूपाकार ग्रहण किये है, वहीं कन्हैयालाल वर्मा ने पुराने संदर्भो को ही नया आयाम दिया है। नाथूलाल वर्मा भी इसी कड़ी को आगे बढ़ाने में प्रयत्नशील है। लेकिन उनके संयोजनों व विषयों में नवीनता है। तेजसिंह व ललित शर्मा भी इसी श्रृंखला के चित्रकार है जिन्होने उदयपुर के वातावरण को ही चित्रों में स्थान दिया है।''

उदयपुर की दो महिला कलाकारों ने राष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बनाई है वे है– प्रभाशाह व किरण मुर्डिया। प्रभाशाह उदयपुर के राजप्रसादों, भवनों, वनस्पति, छतरियों, पर्वतों की सुन्दर रंग छटाओं को पारदर्शिता के साथ प्रस्तुत करती रही है। किरण मुर्डिया के चित्रों में भी उदयपुर के महल, पर्वत वृक्षावलियाँ दिखाई देती है। मुर्डिया ने इनका प्रस्तुतिकरण बड़े ही निराले ढंग से किया गया है।

पारम्परिक पुरातन शैलियों में कार्य करने का आग्रह व लोकशैली के तत्वों से प्रभावित जिन कलाकारों ने राष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बनाई है उनमें रामेश्वर सिंह व बसन्त कश्यप प्रमुख है। रामेश्वरसिंह ने राजस्थान की परम्परागत लोक चित्रकला शैली ''फड़'' को केनवास पर नये संदर्भो ं प्रस्तुत किया है। रामेश्वरसिंह की कला में परम्परा को बदलने का प्रबल बोध है। बसन्त कश्यप की कला का सबसे प्रमुख तत्व है– शिल्पाग्रह व लोकचेतना। इनके चित्र सहज और सामान्य विषयों का आकृतिपरक लोक बुनावट के साथ इतना भिन्न चित्रण है कि बहुप्रचलित से नया भाव तुरन्त पनपता है। कठपुतली कला से प्रभावित इनकी शिल्प रचनाओं की आकृतियाँ अपने रंगबोध में पर्याप्त चेतना समेटे हुए है। रेलगाड़ी के डिब्बे में यात्रारत युगल उनका अपेक्षाकृत अधिक ज्ञात विषय है। त्रिआयामी रचना के तौर पर इनके कार्य में दर्शनीयता अधिकतम है। ग्रामीण परिवेश की बाल सुलभता इनमें दृष्टव्य है।

ग्राफिक विधा के माध्यम से ख्याति अर्जित करनेमें सफल रहे कलाकारों में शैल चोयल, किरण मुर्डिया, सुब्रतो मण्डल, सुनील घिन्डियाल व विनय शर्मा प्रमुख है। सुनील घिन्डियाल रेखांकन विषयात्मक व भावाभिव्यक्ति से अत्यन्त सशक्त दिखाई देते है। वहीं विनय शर्मा भी ग्राफिक की दुनिया में कुछ नया कर गुजरने की इच्छा रखते है।

समकालीन कला के क्षेत्र में इस समय कुछ मूर्तिकाररों ने अमूर्त व मूर्त रचनाओं के माध्यम से मूर्तिशिल्प के रचना संसार में अपनी पहचान बनाई है। जिसमे अर्जुन प्रजापति, मुकुटबिहारी नाहटा, राजेन्द्र मिश्रा, अंकित पटेल के नाम उल्लेखनीय है। युवा वर्ग मे पंकज गहलोत, अशोक गौड़, भूपेश कावड़िया, राजस्थान के नवीन शिल्प रचना संसार में अपना स्थान बनाने के लिए प्रयासरत है।

संदर्भ

1. शेष हेमन्त, राजस्थान में आधुनिक कला के पांच दशक, कला दीर्घा, भाग–3, नं. 6, अप्रेल 2003, प्रकाशक उत्कर्ष प्रतिष्ठान– लखनऊ
2. चतुर्वेदी ममता, समकालीन भारतीय कला, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी जयपुर– 2008
3. भटनागर शेलेन्द्र, कला के समसामयिक विकास में राजस्थान, आकृति रजत जयन्ति अंक, सम्पादक विद्यासागर उपाध्याय– राजस्थान ललित कला अकादमी, जयपुर
4. आचार्य राजीव, चतुर्दिक, प्रकाशक– जवाहर कला केन्द्र जयपुर, अप्रेल– जून–2010